प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य श्री महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर – 331 403

''धर्मकार्य में लगने वाली बुद्धि सराहनीय होती है''
– युवाचार्य महाश्रमण

सरदारशहर, 27 अप्रैल,2010।

तेरापंथ धर्मसंघ राष्ट्रीय संत आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में मंगलवार को हुई धर्मसभा में युवाचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि धैर्यवान व्यक्ति ही परमात्मा को प्राप्त कर सकता है, इसलिए व्यक्ति को धैर्यवान होना चाहिए।

मंगलवार को मंगलचन्द भंवरलाल बैद के आवास स्थल पर हुई धर्मसभा में युवाचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि इन्द्रियों से मिले ज्ञान का विश्लेषण बुद्धि करती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि धर्म कार्य और श्रेष्ठ कार्यों में लगे, वही सराहनीय और अनुकरणीय होता है। बुरे काम करने वाली बुद्धि किसी काम की नहीं होती। शरीर और वाणी का योग है, अगर यह योग राग और द्वेष से जुड़ जाए तो वह विनाशकारी हो जाता है और धर्मकर्म से जुड़कर सुखदायी हो जाता है। उन्होंने कहा कि राग–द्वेष कार्य के बीज है, जो मोह पैदा करते हैं। जो व्यक्ति मोह पर अंकुश लगा दे, वह परमात्मा की भूमि पर अग्रसर हो सकता है।

उन्होंने कहा जिस व्यक्ति का मन विचलित नहीं होता वह व्यक्ति वीर कहलाता है। आदमी को कभी भी तत्काल बिना सोचे समझे निर्णय नहीं लेना चाहिए, क्योंकि उत्तेजना और आवेश में बिना सोचे समझे कई बार व्यक्ति बहुत बड़ा अनर्थ कर बैठता है। इसलिए कोई भी कार्य करने से पहले शांत मन से सोचें और अनाशक्ति से कार्य करें। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में घटित होने वाली घटना से सद्प्रेरणा लेने का प्रयास करना चाहिए। सभा का शुभारंभ साध्वीश्री ने मंगल गीत से किया। तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष अशोक नाहटा ने आगामी कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। अध्यापक तेजपालसिंह चौधरी ने संतों का स्वागत करते हुए विचार व्यक्त किए। सभा का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

शीतल बरड़िया
(मीडिया संयोजक)